

वर्तमान समय में कृषि वानिकी के महत्व

कृषि कुंभ (सितंबर, 2023),

खण्ड 03 भाग 04, पृष्ठ संख्या 20-21



वर्तमान समय में कृषि वानिकी के महत्व

पूजा शर्मा<sup>1</sup> एवं रवि कुमार<sup>2</sup><sup>1</sup>पीएच0 डी0, रिसर्च स्कॉलर, कृषि वानिकी विभाग,<sup>2</sup>पीएच0 डी0, रिसर्च स्कॉलर, पादपरोग विज्ञान,

जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (मध्यप्रदेश) 482002,

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तरप्रदेश) 208002,, भारत।

Email Id: rkm46327@gmail.com

### परिचय –

वर्तमान समय में बढ़ती जनसंख्या दर और तेजी से वातावरण में होने वाले उतर चढ़ाव को ध्यान में रखते हुए बहुत से बदलाव की आवश्यकता है, जिन्हे आज के इस आधुनिक दौर में अपना नितान्त आवश्यक हो गया है जिसमे न केवल मानव की दैनिक आवश्यकता की प्रतिपूर्ति हो सके अपितु हमारे पर्यावरण पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़े जो की निश्चित तौर पर हमारी धरा व जलवायु के लिए हितकर सिद्ध होगा।

कृषि वानिकी एक व्यवस्थित प्रणाली है जिसमे पारम्परिक तौर से भूमि को आधी उपयोग में लाया जाता है। इसमें फसल उत्पादन, वृक्षारोपण एवं पशुपालन को समाहित किया जाता है। इसके द्वारा न केवल कृषको को पर्याप्त मात्रा में फसल से आय प्राप्त होगी बल्कि इमारती लकड़ी,

जलाऊ लकड़ी, चारा, फल, सब्जी, औषधि से अतिरिक्त आय सुनिश्चित होगी। पशुपालन से प्राप्त आय के अतिरिक्त गोबर की खाद भी प्राप्त होगी जो फसल के लिए अत्यंत उपयोगी है। इसके आलावा कृषि वानिकी में मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन, रेशम कीट पालन, बकरी पालन, मछली पालन आदि को शामिल जाता है।

### कृषि वानिकी के महत्व –

#### 1. कृषि के क्षेत्र में :

कृषि वानिकी में फसल के साथ साथ वृक्षों से भी आय प्राप्त होती है, फसल खराब होने पर वृक्ष आय सृजित कर फसल बीमा की भूमिका निभाते हैं। फसल व वृक्ष एक दूसरे को लाभान्वित भी करते हैं।

उदाहरण : शीशम, गेहूँ सरसो, बबूलचना, यूकेलिप्टस, गेहूँ, शीशम, धान।

#### 2. व्यावसायिक क्षेत्र में:

प्लाईवुड उद्योग, टिम्बर उत्पादन, पल्प पेपर उद्योग के लिए कच्चा माल उत्पादन हेतु कृषि वानिकी का महत्वपूर्ण योगदान है।

### ३. उर्वरको के उपयोग में कमी:

कृषि वानिकी के अंतर्गत उगाये गए पेड़ों से नाइट्रोजन स्थरीकरण होता है। प्रतिवर्ष ५०-१०० कि. ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर स्थरीकृत करने कि क्षमता इन वृक्षों में होती है। वृक्षों कि गिरी हुई पत्तियों से ह्यूमस का निर्माण होता होता है जिससे रासायनिक उर्वरको के उपयोग में कमी आती है।

### ४. पारस्थितिकी में अनुकूलन:

काम रसायनो के प्रयोग से मानव जनित दुष्प्रभाव कम हो जाते है. मृदा लम्बे समाया तक उपजाऊ बनी रहती है. जल कटाव नियंत्रण होता है। मृदा कि जल धारण क्षमता में इजाफा होता है, जैव विविधता संरक्षण होता है तथा स्वच्छ वायु प्राप्त होती है।

### ५. वैश्विक जलवायु:

वृक्षारोपण से मृदा का क्षरण रुक जाता है, हवा द्वारा ऊपरी सतह का स्तनांतरण रुक जाता है। रेगिस्तान में तब्दीली में कमी आती है। भूमि का वृक्षों अवं वनस्पतियो से ढके रहने के कारन कार्बन

सिंक क्षमता में बढ़ोत्तरी होती है। २०३० तक २६ मिलियन हेक्टेयर भूमि क्षरण तटस्थता प्राप्त होगी साथ ही २०३० तक २५ से ३० मिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड ककरबन सिंक होगा।

### ६. ऊर्जा के क्षेत्र में:

कृषि वानिकी से अधिक मात्रा में बायोमास उत्पन्न होता है जिससे बायोमास आदरित ऊर्जा का उत्पादन व संवर्धन अधिक होगा।

### कृषि वानिकी को बढ़ावा देने हेतु कार्य

१. पर्याप्त नीति योजनाओ को बढ़ाव देना।
२. कृषिवानिकी मॉडल अपनने पर सब्सिडी प्रदान करना।
३. वृक्षारोपण से होने वाले फायदे को लेकर लोगो को जागरूक करना।
४. सभी छोटे भूमिहारो को वित्तीय मदद प्रदान करना।
५. छोटे किससनो के लिए एक पद्धति विकसित करना जिससे वो कार्बन ट्रेडिंग कर आय अर्जित कर सके।
६. किसानो के लिए ऐसी नीति बनाये जिसमे कम से कम १०% भूमि पर वृक्ष आच्छादित होना सुनिश्चित हो।
७. नीति निर्माताओं को भूमि उपयोग एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन से सम्बंधित सभी नीतियों में कृषि वानिकी को सम्मिलित करना चाहिए।